Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 217-220

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सूर्य पूजा (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

डॉ. ललित कुमार पंवार*

सार

राजस्थान, भारत का एक प्रमुख सांस्कृतिक राज्य, प्राचीन धार्मिक परंपराओं और विविध लोकआस्थाओं का धनी केंद्र रहा है। सूर्य पूजा, अर्थात सूर्य देवता की आराधना, इस क्षेत्र की धार्मिक और सांस्कृतिक जीवनशैली में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह शोध राजस्थान में सूर्य पूजा की परंपरा, उसके ऐतिहासिक विकास, लोककथाओं, लोक–त्योहारों तथा स्थानीय संस्कृति में उसके प्रभाव का अध्ययन करता है। शोध में यह पाया गया कि राजस्थान में सूर्य पूजा न केवल वैदिक और पुराणिक परंपराओं से जुड़ी है, बल्कि यह ग्रामीण जीवन, कृषि–व्यवस्था तथा लोकसंस्कृति में भी गहराई से समाई हुई है। विशेष रूप से मकर संक्रांति, छठ पूजा (पूर्वी राजस्थान में), तथा सूर्य मंदिरों जैसे झुंझुनूं का सूर्यमंदिर और Osian (ओसियां) जैसे तीर्थस्थल इसकी धार्मिक महत्ता को दर्शाते हैं। राजस्थानी लोकगीतों, भजनों और चित्रकला में भी सूर्य की महिमा का वर्णन मिलता है। शोध का निष्कर्ष यह है कि सूर्य पूजा राजस्थान की धार्मिक विविधता का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद आज भी जीवित है और लोगों के सांस्कृतिक व आध्यात्मिक जीवन में गहराई से जुड़ी हुई है।

***शब्दकोशः सूर्य पूजा**, लोककथा, लोकसंस्कृति, कृषि–व्यवस्था, आध्यात्मिक जीवन, चित्रकला।*

प्रस्तावना

संसार को सूर्य से ही जीवन और अस्तित्व प्राप्त है विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं में सूर्य को महत्त्वपूर्ण देवता के रूप में पूजा जाता है। वैदिक से लेकर पौराणिक काल तक विष्णु व शिव के बाद भारत में सूर्य सबसे पूजनीय देवता माना जाता किंतु सिंधु सभ्यता में इसका कोई उल्लेख नहीं हैं। ऋग्वेद में सूर्य को देवताओं का मुख, सभी प्राणियों की आत्मा, वरूण व अग्नि की आँख, मनुष्यों के सही व गलत कर्मो का पर्यवेक्षक और सभी चल अचल चीजों का रक्षक माना जाता है।[1]

राजस्थान में भी मतस्य के राजा विराट के भाई का नाम सूर्यदत्त होना मतस्य क्षेत्र में सूर्य की लोकप्रियता का संकेत मिलता है। सांभर में हमें एक रथ पर बैठे सूर्य की एक टेराकोटा मूर्ति मिलती है। डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार 'सूर्य देवता के साथ इसकी पहचान सुनिश्चित नहीं है। प्रारम्भिक समय में सूर्य की पूजा चक्र, कमल या गोले के किसी प्रतीक के रूप में की जाती थी।'[2]

गुप्तकाल में राजस्थान सहित उत्तर भारत के लोग, वराहमिहिर द्वारा वर्णित रूप में सूर्य की पूजा करने लगे।

---

* सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

बलीचा (मेवाड़) में हमें एक वास्तु शिल्पीय कृति मिलती है जिसमें एक आले के अन्दर सूर्य की आकृति बनी हुई है उसके दाहिनी ओर तीन सूर्य की आकृतियां बनी है तथा चित्तौड़ पर मंदसौर का आधिपत्य प्रमाणित करता है और कुमारगुप्त के मंदसौर शिलालेख में सूर्य पूजा का उल्लेख है इससे स्पष्ट होता है कि मेवाड़ में सूर्य पूजा लोकप्रिय थी।

राजस्थान में सूर्य पूजा की लोकप्रियता का स्वर्णिम काल 7वीं से 12वीं सदी रहा। चित्तौड़ नादेसमण, छोटारमी (प्रतापगढ़), चीनेह, तलवाड़ा (बांसवाड़ा), बड़गांव (डूंगरपुर) आदि के सूर्यमन्दिर इस लोकप्रियता के प्रमाण है जो सभी लगभग इसी काल के है। डूंगरपुर के एक शिव मन्दिर में हमें सूर्य प्रतिमा के नीचे 11वीं सदी का शिलालेख मिलता है जिसमें तलवाड़ा, छिंछ सूर्यमन्दिरों के साथ सूर्य पूजा लोकप्रिय थी। 1109 ई. अर्थूना (बांसवाड़ा) मन्दिर शिलालेख में सूर्य को प्रमुख देवता बताया है।[3]

डॉ. ओझा के अनुसार 'सिरोही राज्य में 600–1400 ई. के काल का शायद ही कोई ऐसा गांव हो जहां सूर्य मन्दिर या सूर्यदेव की खंडित प्रतिमा न हो।'

सूर्यपूजा का एक बड़ा केन्द्र भीनमाल था जो राजस्थान के सबसे पुराने सूर्य मन्दिर का दावा करता है इस मंदिर से मिले जगतसिंह देव चौहान के शिलालेख (1239 वि.सं.) जालौर के चौहान राज उदयसिंह (1262 वि. सं.) चाचांगदेव (1344 वि.सं.) के शिलालेखों से सूर्यमन्दिर को दिये गये दान व जीर्णोद्धार के साक्ष्य प्रमाणित होते हैं। पिण्डवाड़ा, बसंतगढ़, रोहेरा, कासा, वर्माना, नोनेरा, मूंगथला, हनद्रा, हाथला के सूर्य मन्दिर और इन स्थानों से प्राप्त सूर्य प्रतिमाएं साथ ही असावा, कयाद्रेन, चंद्रावती ओरे मलगाम अजारी सतोपुर आदि इस क्षेत्र में सूर्य पूजा स्थानों के बारे में विस्तार में बताते है।[4]

मारवाड़ क्षेत्र में ओसियां सूर्यपूजा का प्रसिद्ध केन्द्र था जिसका प्रमाण यहाँ स्थित सूर्य मन्दिर है। भवाल (मेड़ता) में पंचायतन महाकाली मन्दिर के गर्भगृह के बाहर स्थित सूर्य प्रतिमा, साथ ही पोकरण, पाली, बिठू से प्राप्त प्राचीन सूर्य प्रतिमा सूर्य पूजा की लोकप्रियता दर्शाती है। मंडोर से प्राप्त बैठी हुई सूर्य प्रतिमा और 12वीं सदी का टूटा हुआ मंडोर शिलालेख जो अब जोधपुर संग्रहालय में है में दिवाकर पूजा का उल्लेख मिलता है, साथ ही किराडू में भी सूर्य मन्दिर का संभवत उल्लेख मिलता है।[5]

डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार 'अजमेर क्षेत्र में 12वीं सदी की पुरानी व सुन्दर नक्काशीदार सूर्य की आकृ ति बाघेरालो (केकड़ी, अजमेर) से मिली है। थांवला शिलालेख में रत्नादित्य के सूर्य मन्दिर को दान का उल्लेख है।' शर्मा ने पुष्कर व अजमेर में भी सूर्य पूजा के प्रसिद्ध केन्द्रों में से एक माने है।[6]

अजमेर में हर्षनाथ के शैव मन्दिर से प्राप्त एक उल्लेखनीय सूर्य प्रतिमा में सूर्य को सर्वोच्च देवता के रूप में दिखाया है, इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश को सूर्य के रूप में ही दर्शाया गया है। डॉ. गाट्ज ने तो हर्षनाथ मन्दिर को इसी आधार पर मूल रूप में सूर्य मन्दिर ही माना है। कामा, भरतपुर से प्राप्त आयताकार पत्थर के खण्ड पर दुर्लभ मार्तंडमूर्ति जो मूल रूप से 10वीं 11वीं सदी के मन्दिर में सूर्य पूजा की लोकप्रियता दर्शाती है।[7]

अलमसूदी के विवरण से हमें पता चलता है कि जब भी प्रतिहारों ने मुल्तान पर कब्जा करने के बारे में सोचा तो इस जगह के अरब गवर्नर इस मन्दिर में सूर्य देवता की मूर्ति को नष्ट करने की धमकी देते थे और प्रतिहार पीछे हट जाते थे। यह दर्शाता है कि मुल्तान का सूर्य मन्दिर प्रतिहारों और राज. के लोगो के लिए पूजनीय था। उपरोक्त विवरण निसंदेह सिद्ध करता है कि राजस्थान में सूर्य पूजा व्यापक लोकप्रिय थी।[8]

डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार 'सूर्य देवताओं में सबसे अधिक बोध गया कल्याणकारी है यह संरक्षक देवता के रूप में पहचाना जाता है। अतः मनुष्य को केवल शास्त्रों से ज्ञात अदृश्य देवताओं के प्रति इतना समर्पित नहीं होना चाहिए उसे उस सूर्य के प्रति समर्पित होना चाहिए जिसे पृथ्वी अपना जीवन और अस्तित्व प्राप्त करती है।'[9]

राजस्थान में सूर्य पूजा के प्रसार व लोकप्रियता का श्रेय प्रतिहार शासकों को दिया जा सकता है। ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार रामभद्र को सूर्य की कृपा से अपना पुत्र मिहिरभोज प्राप्त हुआ महेन्द्रपाल द्वितीय के

प्रतापगढ़ शिलालेख में विनायकपाल को परमादित्य भक्त के रूप में वर्णित किया गया। इसी काल के प्रारम्भ में सूर्य को प्रतीक पूजा मानते थे लेकिन धीरे–धीरे सूर्य की मूर्ति भी बनने लगी।

वराहमिहिर द्वारा वर्णित सूर्य पूजा में सूर्य की पोशाक और आभूषणों के बारे में 'सूर्य भगवान को उत्तरवासी की तरह कपड़े पहनने चाहिए पैरो से लेकर वक्ष तक ढका होना चाहिए उन्हें मुकुट पहनना चाहिए और कमल के फूल हाथ में हो चेहरे पर बालिया, लम्बी माला पहनी हो।' सूर्य प्रतिमाओं को सदैव ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ संयुक्त छवि में दिखाया जाता है और आदिकाल से ही इन देवताओं के साथ सूर्य को जोड़ा जाता रहा है वेदों में सूर्य को विष्णु त्रिविकम और पुराणों में विष्णु की दाहिनी आँख बताया है शैवों ने न केवल शिव का उपासक माना बल्कि उन्हें अपनी अष्ट मूर्तियों में शामिल किया है।[10]

पौराणिक कथाओं के अनुसार रेवतं को सूर्य का पुत्र माना जाता है इसलिए सूर्य के उपासकों ने रेवतं की भी प्रतिमाएं बनाई है अजमेर संग्रहालय में हमारे पास 11वीं सदी की रेवतं की प्रतिमा है जो सिरोही क्षेत्र से मिली है तथा एक अन्य प्रारम्भिक मध्यकालीन काल की प्रतिमा हारस पहाड़ी से मिली है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में राजस्थान के अधिकांश क्षेत्र सूर्य पूजा के लिए प्रसिद्ध थे सूर्य पूजा के प्रसार और लोकप्रियता में राजस्थान का योगदान उपर वर्णित सूर्य की परम्पराओं मूर्तियों और मन्दिरों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं।

भारत की धार्मिक परंपराओं में सूर्य पूजा का अत्यंत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक सूर्य की उपासना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। यह परंपरा न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से भी गहराई से जुड़ी हुई है। राजस्थान, जो अपने लोकजीवन, धार्मिक मान्यताओं और स्थापत्यकला के लिए जाना जाता है, सूर्य पूजा की परंपरा का एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

राजस्थान का भौगोलिक परिवेश, जहाँ सूर्य की किरणें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, सूर्य की महत्ता को और भी बढ़ाता है। मरुस्थलीय परिस्थितियों में सूर्य न केवल ऊर्जा और प्रकाश का स्रोत है, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। यही कारण है कि यहाँ सूर्य देव को अत्यंत आदर और श्रद्धा के साथ पूजा जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो वैदिक साहित्य में 'सविता', 'मित्र', 'भास्कर' आदि नामों से सूर्य देव का उल्लेख हुआ है और यह परंपरा राजस्थान की लोकमान्यताओं में निरंतर जीवित रही है।

राजस्थान में सूर्य की पूजा के कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रमाण उपलब्ध हैं। विशेष रूप से सूर्य मंदिरों की उपस्थिति इसका प्रमाण है। जालोर, उदयपुर, ओसियां, खमनोर, रणकपुर तथा अजमेर के निकट स्थित पुष्कर क्षेत्र में प्राचीन सूर्य मंदिरों के अवशेष पाए जाते हैं। इन मंदिरों की स्थापत्य शैली अत्यंत वैभवशाली रही है, जिनमें सूर्य देव को स्थारूढ़, सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रूप में चित्रित किया गया है। ये मंदिर न केवल धार्मिक केंद्र थे, बल्कि सामाजिक आयोजनों और लोकसंस्कृति के अभिव्यक्ति स्थल भी थे।

राजस्थान के लोकजीवन में सूर्य पूजा विभिन्न पर्वों और लोक अनुष्ठानों के रूप में भी अभिव्यक्त होती है। प्रातःकालीन सूर्य अर्घ्य की परंपरा, विशेष अवसरों पर सूर्य देव को जल अर्पण करना, व्रत–उपवास आदि सामाजिक धार्मिक क्रियाएं आज भी प्रचलित हैं। छठ पूजा, संक्रांति, अष्टमी, सप्तमी आदि अवसरों पर सूर्य की पूजा की जाती है। कुछ विशेष जनजातियाँ जैसे भील, मीणा आदि भी सूर्य की उपासना को अपने आराध्य देव की तरह स्वीकार करते हैं। राजपूत परंपरा में सूर्यवंश की अवधारणा भी सूर्य पूजा की सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है। मेवाड़ के सिसोदिया शासक स्वयं को सूर्यवंशी मानते थे, और उनके झंडे तथा राजचिन्हों में सूर्य का प्रतीक चतवउपदमदजसल अंकित रहता था।

इतिहासकारों ने यह स्वीकार किया है कि राजस्थान में सूर्य पूजा की परंपरा एक ओर जहाँ वैदिक धार्मिकता से प्रेरित है, वहीं दूसरी ओर यह लोक परंपराओं से भी उतनी ही गहराई से जुड़ी है। यही कारण है कि शासकीय प्रश्रय प्राप्त होने पर भी यह परंपरा केवल शाही दरबार तक सीमित नहीं रही, बल्कि जनमानस में

रच–बस गई। लोकगीतों, लोककथाओं और धार्मिक कथानकों में सूर्य देव की स्तुति और महिमा का वर्णन सामान्यतः मिलता है।

राजस्थान के मंदिर शिल्प में भी सूर्य पूजा की महत्ता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। रणकपुर और ओसियां के मंदिरों में सूर्य प्रतिमाएं, नक्काशीदार रथ, सप्त अश्व, और किरणों की आकृतियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि सूर्य केवल पूजा का विषय नहीं बल्कि स्थापत्य सौंदर्य का भी प्रेरणा स्रोत रहा है। यहाँ तक कि कुछ पुराने जलाशयों और बावड़ियों का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि प्रातःकालीन सूर्य की किरणें सीधे जल पर पड़ें और एक दिव्य अनुभूति उत्पन्न करें।

राजस्थान की सूर्य पूजा परंपरा में यह विशेषता रही है कि यह हिन्दू धर्म की सीमाओं में बंधी नहीं रही, बल्कि यह एक समन्वयकारी और सर्वग्राही परंपरा के रूप में विकसित हुई है। यह परंपरा ऋतुओं, कृषि और ग्रामीण जीवन से जुड़कर एक जीवंत लोक परंपरा के रूप में उपस्थित है। सूर्य न केवल आराध्य है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में शक्ति और प्रेरणा का प्रतीक है।

ऐतिहासिक दृष्टि से सूर्य पूजा की यह परंपरा समय के साथ बदलती रही, लेकिन उसका मूल स्वरूप और भावना आज भी राजस्थान के जनजीवन में उपस्थित है। शहरीकरण और आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद भी सूर्य पूजा की परंपरा टूटती नहीं, बल्कि नई परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होकर जीवित रहती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सूर्य पूजा राजस्थान में केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का एक प्रमुख अंग रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अजमेर संग्रहालय के चित्र
2. डॉ. ओझा, राजपूताना का इतिहास, भाग–III, डूंगरपुर राज्य, भाग–I
3. दशरथ शर्मा, राज. थ्रु द एजेज
4. जी. एन. शर्मा, उद्घत
5. जी. एन. शर्मा, उद्घत
6. वीरविनोद, भाग– II, प्रकरण
7. डॉ. ओझा हिस्ट्री ऑफ राजपूताना, भाग– II, बांसवाड़ा
8. Epigraphy of India No. 34
9. डॉ. ओझा सिरोही राज्य का इतिहास
10. जी. एन. शर्मा, राजस्थान इतिहास के स्रोत

♦❐♦